International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2019; 1(1): 78- 81
Received: 06-06-2019
Accepted: 10-07-2019

डॉ. अनिल गुप्ता
सह आचार्य, चित्रकला विभाग,
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिल गुप्ता
सह आचार्य, चित्रकला विभाग,
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, भारत

भारत के 5 प्रमुख ज्यामितीय शिल्पकार

डॉ. अनिल गुप्ता

सारांश
आधुनिक भारतीय चित्रकला मे ज्यामितीय रूपाकारों के प्रयोग से पूर्व ज्यामितीय रूपाकारों का प्रयोग भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से सर्वप्रथम पाश्चात्य कला जगत में देखने को मिलता है। भारत में स्वतंत्रता पश्चात कलाकार नवीनता की खोज में वस्तुनिरपेक्ष ज्यामितीय रूपाकारों का अंकन करने लगे जैस एम.एफ. हुसैन ने धनवादी प्रभाव लिए नारी का अंकन किय। उनके चित्र पिकासो के चित्रों से काफी प्रभावित थे। भारत भाग्य विधाता चित्र में ज्यामितीय और अर्द्धज्यामितीय रूपों को देखा जा सकता है।
के.सी.एस. पणिकर के द्वारा बनाई 'वड्र्स एण्ड सिम्बल' सिरीज के चित्र ज्यामितीय रूपाकारों के लोकप्रिय उदाहरण हैं। पणिकर भारतीय कला प्रतिकों, कुण्डलियों, गणितीय ऐबल अरेबिक, रोमन कहानियों से विशेष प्रभावित थे तथा यही उनके सृजन का आधार बनें। समय उपरान्त उन्हें महसूस हुआ कि मलयालम स्क्रिप्ट ज्यादा अनुकूल है। उनके चित्र ज्यामितीय प्रतिकों के साथ कैलीग्राफीक तथा कल्पनाओं का रेखीय रूपान्तरण एक उच्च कोटि की रचना करते हैं।
रामकुमार की बनायी वाराणसी श्रृंखला पर ज्यामितीय रूपाकारों का प्रभाव दिखाई देता है। 'कश्मीर' आईल माध्यम में बनाया गया ज्यामितीय रूपाकारों का सुन्दर उदाहरण है जिसमें प्राकृतिक सौन्दर्य को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत किया है।
के.एस., कुलकर्णी की कला में पिकासो का क्यूबिज्म और पारम्पिक भारतीय लोक और आदिवासी कला समिश्रण देखनें को मिलता है।

कुटशब्दः परिलक्षित, स्ट्रोक, कोणात्मक, बीजमंत्र, डायग्राम, अपठनीय, सुलेखांकन, स्क्रिप्ट

प्रस्तावना
जयामितीय रूपाकारों का सृजनातमक प्रयोग सर्वाधिक आधुनिक कला में देखने को मिला स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय कला जगत में आधुनिकला की शुरूआत हो गयी थी। इसका वयापक प्रभाव 'वस्तुनिरेपक्ष कला' के रूप में कला जगत में देखने को मिला। कलाकार भावामिव्यक्ति हेतु नये–नये आयामों की खेज करने लगा, उनमें से ज्यामितीय रूपाकार भी एक भावमिव्यक्ति माध्यम के रूप में उभर कर सामने आया।
आधुनिक भारतीय चित्रकला में जयामितीय रूपाकारों के प्रयोग से पूर्व ज्यामितीय रूपाकारों का प्रयोग भाविमिव्यक्ति के दृष्टि से सर्वप्रामि पाश्चात्य कला जगत में देखने को मिलता है। चित्रकला के क्षेत्र में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों में से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन धनवाद के रूप में उभर कर सामने आया, जिसमें बहुतायत ज्यामितीय रूपाकारों का प्रयोग हुआ। इसके प्रभाव से भारतीय कला जगत भी अछूता नहीं रहा। इसने कई कलाकारों की चित्र शैलियों को प्रभावित किया।
स्वतंत्रता पश्चात नये–नये कलाकार ग्रुप उभर कर सामने आये जिसमे पैग, मुम्बई, दिल्ली शिल्प चक्र ग्रुप 1980 इतयादि प्रमुख है। कलाकार नवीनता की खेज में वस्तुनिरपेक्ष कृतियों बनाने लगे, अव चित्र रचना में प्रयुक्त रूपाकार बाह्य संसार से संबंधित न होकर मनोजगत से संबंधित होने लगे। मनोजगत के प्रतिबिम्बों को साकार करने के लिए नये–नये रूपाकारों, विधियों, माध्यमों का प्रयोग करने लगे। ज्यामितीय भी उनमें से एक प्रभावी रूपकार है। जिसकों लेकर कलाकार व्यक्तिगत शैलियां विकसित करने लगा।

एम.एफ. हुसैन
हुसैन कई विधाओं के कलाकार है उन्होंने म्यूरलिस्ट कलाकार के रूप में भी पहचान बनायी, हुसैन कभी एक विषय से बंधकर नहीं रहे। प्रयोगशीलता उनके चित्रों का आधार है। उन्होंने पोट्रेट (गांधी, टेरेसा, बॉलीवुड सितारे) रामायण, महाभारत प्रसंग ब्रिटिश राज, शहरी, ग्रामीण परिवेश को चित्रित किया। हुसैन के चित्रों में अधिकांश दिखाई देने वाले हाथी, छोड़े, बन्दर मध्ययुगीन मूर्तिकला की पुनर्व्याख्याएं हैं। वे कहते हैं कि मैंने इन जानवरों को जंगल में नहीं देखा बल्कि खुजराहों कोणार्क, महाबलिपुरम के मन्दिरों की दीवारों पर पत्थरों में कैद देखा। मैंने इनको इनके आकारों से मुक्त किया।

नारी चित्रांकन हुसैन के चित्रों की प्रमुख विशेषता है। उनके ज्यादातर चित्रों में नारी चित्रांकन मिल जाता है। केवल विषय प्रसंग बदल जाते है। यह उनके मन में नारी के प्रति श्रद्धा भाव को प्रकट करता है। उन्होंने पोस्टर डिजाइनर, खिलौना डिजाइनर के रूप में भी काम किया। हुसैन ने चित्रण की अपनी शैली विकसित की थी। वे पिकासों के चित्रों से काफी प्रभावित हुए। उनका धनवादी प्रभाव हुसैन के चित्रों में परिलक्षित हुआ। हुसैन के सभी चित्रों को घनवादी कहना भी उचित नहीं है। उनके कई चित्र फिगरेटिव श्रेणी में आते है। हुसैन का चित्र निर्माण का अलग तरीका है उनके द्वारा प्रयुक्त मोटी रेखाओं के स्ट्रोक चित्रों को नई ऊर्जा से भर देते हे। उनके चित्रों में ज्यामितीय रूपाकारों को भी देखा जा सकता है। कहीं पूर्ण ज्यामितीय तो कहीं अर्द्धज्यामितीय रूप तो कहीं केवल कोणात्मक प्रभाव लिए प्रकट होते है।

हुसैन मूर्त और अमूर्त दो विधाओं में संतुलन बनाकर चले है। उनके कुछ चित्रों को वास्तु सदृश्य (मूर्त) के करीब तो कुछ अमूर्त (वस्तु निरपेक्ष) के करीब पाते है। हुसैन ने असंख्य चित्रों का निर्माण किया जैस– टोगा (1950) बीणा वादक, भारत भाग्य विधाता (1964), महाभारत, राजस्थान, अन्तिम भोज, रागमाला, जमीन, स्पिलिट बैटल ऑफ गंगा एंड जमुना (महाभारत) इत्यादि। भारत भाग्य विधाता में ज्यामितीय और अर्द्धज्यामितीय रूपों को देखा जा सकता है। भूरे, पीले, नीले, धूसर रंगों द्वारा चित्र को पूरा किया गया है। भूरे रंग में ब्रश के स्ट्रोक द्वारा ब्राह्य रेखांकन किया गया है। चित्र में ग्रामीण परिवेश को दिखाने की चेष्टा की है। चित्र में कही गोल मुखाकृति, ऊँट, भवन, हाथी, शेर की झलक दिखायी गयी है। यह चित्र टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में संग्रहित है।

हुसैन को संगीत में भी रूचि थी। उनहोंने रागमाला श्रृखला पर काम किया, वाद्ययंत्रों को भी चित्र में प्रयुक्त किया। 'द लेडी विद सितार' ज्यामितीय रूपाकारों के प्रयोग की दृष्टि से उत्तम उदाहरण है। चित्र में एक महिला को हाथ में सितार लिए चित्रित किया है।

चित्र के बांयी ओर नीचे आयताकार भाग में दो तबला चित्रित किया है। तबले में और सितार में त्रिभुजाकृति व गोलाकार से सुन्दर डिजाइन बनायी गयी है। सफेद, नीले, गुलाबी रंग की संतुलित रंग योजना प्रयुक्त की है। 97 ग 102 आकार का यह चित्र आईल माध्यम में 1979 ई. में बनाया गया है।

'होमेज टू सी.वी. रमन' 1987 ई. में तेल माध्यम में बनाया चित्र है। इस चित्र में ज्यामितीय रूपाकारों द्वारा मानवाकृति बनायी है। त्रिभुज, आयत, वृत्त स्पष्ट रूप से नजर आते है। चटक लाल, पीला, नीला, रंग प्रयोग में लाया गया है। पीछे भूरे रंग की पृष्ठभूमि बनायी गयी है जिसमें स्पष्ट रूप से ये रंग उभर कर अग्रभूमि में आते प्रतीत होते है।

इसी श्रृंख्ला में एक अन्य चित्र जिसमें एक वृक्ष के नीचे त्रिभुजाकृति, वृत्ताकार से बनी मानवाकृतियां बैठी हुई चित्रित है।

के.सी.एस. पणिकर

के.सी.एस. पणिकर का जन्म 31 मई, 1911 ई. को कायम्बटूर, तमिलनाडु में हुआ। कला की प्राचीन रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर कुछ नया अलग करने की चार रखने वाले पणिकर का नाम स्वतंत्रोत्तर भारत के आधुनिक कलाकारों में अग्रिणीय है। पणिकर ने अपनी अमूर्त कलाशैली के द्वारा ज्यामितीय रूपाकारों को नई कलाभाषा प्रदान की है।

पणिकार ने उस समय कला रचना शुरू की जब बंगाल स्कूल और पश्चिमी शैली का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। पणिकर ने इसके विपरीत आधुनिकता की दिशा में एक अलग निजी रेखात्मक शैली विकसित की, जिसने पणिकर को नई पहचान दी। पणिकर की कला यात्रा के विकास के कई चरण है। प्रारम्भ में दृश्यात्मक चित्र, फिर मानवाकृति उसके बाद वर्ड्स एंड सिम्बल सिरीज में बनाए चित्र विशेष लोकप्रिय हुए।

ज्यामितीय रूपाकारों का प्रयोग उनकी 'वर्ड्स एंड सिंबल' सीरिज में दिखाई देता है। 1963 के लगभग उनहोंने 'वर्ड्स एंड सिंबल' कला सीरिज शुरू की। पणिकर भारतीय कला प्रतीकों, कुण्डलियां, गणितीय ऐबल अरेबिक, रोमन कहानियों से विशेषा प्रभावित थे तथा यहीं उनके सृजन का आधार बने तथा कई चित्रों में इनका प्रयोग किया। अजंता की गुफा की कथाओं से उनहें आदर्श रंग पर अलंकारिक प्रदर्शन को समझने का मौका मिला।

काफी समय बाद वे महसूस करने लगे कि मलयालम स्क्रिप्ट ज्यादा अनुकूल है। स्क्रिप्ट को पढ़ा नहींजा सकता, इसको मजबूत आकारों, अक्षरों के समूह में, प्रतीक, डायग्राम, कोलमों के साथ संयोजित किया। उनकी कल्पनाएँ, रंग, शैली केरल की रहस्यमयी तांत्रिक कला से प्रभावित नजर आती है। पणिकर एक ऐसी चित्र शैली निर्मित करना चाहते थे जिसकी जड़े स्वदेश से जुड़ी हो पणिकर अपने चित्रों में रेखात्मक अंकन को अधिक महत्व देते है। लगभग उनके संपूर्ण चित्रों में रेखाओं का लयात्मक प्रभाव दिखाई देता है। चित्रण काल के अन्तिम कार्यों में रेखात्मक गुण सर्वोपरि है। ज्यामितीय प्रतीकों के साथ कैलीग्राफिक तथा कल्पनाओं का रेखीय रूपान्तरण एक उच्च कोटि की रचना करते है।

70 के दशक में पणिकर की शैली में बदलाव नजर आता है। इस समय उनके संयोजनों में पृष्ठभूमि में काले रंग के समतल ज्यामितीय आकार दिखाई देते हैं। जो स्क्रिप्ट प्रतीक से भरे हुए अंकित है। पणिकर ने चित्रों में पतले रंगों का अधिक प्रयोग किया है। जैसा वो प्रारम्भिक जलरंग चित्रों में करते थे।

पणिकर के चित्रों में चटक एवं धूसर, मटमैले दोनों प्रकार के रंग दिखाई देते हैं। वड्र्स एंड सिम्बल सीरीज की प्रारम्भिक कृतियों में चटक लाल, पीला, हरा, सिंदूरी रंग तथा इस सीरीज के अन्तिम चित्रों में धूसर, मटमैले, हल्के पीले, भूरे रंग प्रयोग किए गए हैं।

ज्यामितीय रूपाकारों को प्रयुक्त कर बनाई गई प्रमुख श्रृंखला में वड्र्स एंड सिम्बल सीरीज के चित्र प्रसिद्ध हैं। शीर्षकहीन वड्र्स एंड सिम्बल सीरीज का एक प्रमुख चित्र है, जिसके पणिकर ने हरे, लाल रंग के सपाट धरातल पर ज्यामितीय रूपाकारों, प्रतीकों, गणितीय कोलमों को संयोजित किया है।

ऊपर से काले रंग से रेखांकन किया है। साथ ही शबदों द्वारा धरातल के खालीपन को भरने का प्रयास किया गया है। अपठनीय भाषा, आकारों का सुन्दर संयोजन बनाया गया है। चित्र में दांये ओर नीचे दो त्रिभुजों (उल्टे और सीधे) के मध्य चतुर्भुजाकृति द्वारा सुन्दर डिजाइन बनाया गया हैं जिसमें प्रतीक चिन्हों (मछली, सूर्य, तराजु, चन्द्रमा) को रेखांकित कर अध्यात्म से जोड़ने का प्रयास है। चित्र के मध्य बांये और सीधी खड़ी रेखाओं से कॉलम बनाए गए है, जिसमें कुछ न कुछ लेखांकन किया गया है। कहीं–कहीं तारेनुमा आकृति, कुण्डलीनुमा आकृति भी अंकित है। गणितीय कोलम के ऊपर वृत्ताकार में दो त्रिभुजों से तारानुमा डिजाइन बनाई हे। जिसका प्रतीकात्मक महत्व है। चित्र संयोजन करते समय संतुलन का पूर्ण ध्यान रखा गया है।

वर्ड्स एण्ड सिम्बल सिरीज का एक अन्य चित्र शीर्षकहीन जिसमें पीले नारंगी रंग की योजना काम में ली गयी है। रंगों का प्रयोग बिल्कुल सपाट रूप से किया गया है चित्र में चार अण्डाकार आकृतियां संयोजित की गई है। जिसमें नारंगी रंग भरा गया हैं तीन अण्डाकार आकृति ऊपर तथा एक अण्डाकार आकृति नीचे संयोजित है। इन आकृतियों में शाब्दिक रेखांकन प्रतीकात्मक चिन्ह, गृह नक्षत्र में से प्रतीक, पशु, वृक्ष, काले रंग से रेखांकित किए गए है। चित्रों में बारीकी से किया गया रेखांकन न किसी रहस्यमयी दुनिया का सर्जन प्रतीत होता है। जो अपने में बहुत

से अर्थ समेटे हुए है। इस श्रंखला के आरंभ में रंग योजना चटक ऊर्जा से पूर्ण है तथा बाद में रंगों में हल्कापन धूसरपन आने लगता है। शीर्षकहीन भी इसी प्रकार का उदाहरण है। रंग बिल्कुल चमकहीन सपाट हे। चित्र में पतले रंग द्वारा चौकोर आकृति जिसके कोने गोलाई लिए है एवं अण्डाकृति बनाई है। चौकोराकृति में एक वृत तथा बेलनाकृति है। इन आकृतियों में रेखांकन इस प्रकार किया हैं कि कुछ न कुछ भाषा लिपि का सा प्रभाव दिखता है लेकिन वास्तव में इसका संबंध किसी भी भाषा से नहीं है। साथ में गणितीय कॉलम संयोजन इस प्रकार किया गया है कि चौकोराकृति पृष्ठभूमि में तथा रेखांकन स्क्रिप्ट, प्रतीक अग्रभूमि में नजर आते है।

मोनोक्रोमेटिक लाल रंग योजना में बनाया गया यह चित्र विभिन्न प्रतीकात्मक चिन्हों से संयोजित है। यह उनके वर्ड्स एण्ड सिम्बल सिरीज के अन्तिम चरण में बनाए गए प्रमुख चित्रों में से एक है। चित्र में एक बड़े वृत्ताकार के साथ वर्गाकार, छोटे वृत्त, यू आकृति संयोजित है साथ में सुलेखांकन है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के विभिन्न प्रतीक चिन्हों को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से आधुनिक बना देने की विशेषता पणिकर के चित्रों में नजर आती है। साथ ही सीधी खड़ी रेखाएं, लेखांकन, ज्यामितीय आकार, पणिकर की कलाकृतियों को नई पहचान दिलाती है। अपनी कृतियों के द्वारा कला की चेतना की न केवल रक्षा की वरन उसे विशुद्ध, सांस्कृतिक अभिप्रायों में विन्यस्त कर उसे एक गहन मंथन का विषय बनाया।

रामकुमार

प्रयोगवादी कलाकार के रूप में पहचान बनाने वाले रामकुमार का जन्म 1924 में शिमला में हुआ। रामकुमार का कला सृजन का काल काफी लम्बा रहा। उन्होंने 20वी से 21वीं शताब्दी तक अमूर्त शैली में रचनाएं की।

रामकुमार के चित्रों पर ज्यामितीय रूपाकारों का प्रभाव दृष्टिगत होता है। मुख्य रूप से 1960 ई. से 1970 ई. के दौरान बनायी गयी वाराणसी श्रृंखला पर यह प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे अपने गुरू 'फर्नाण्ड लीजे'से काफी प्रभावित थे। उनकी क्यूब शैली को अपनाया। क्यूब शैली से प्रभावित प्रमुख चित्रों में 'खंडर' 1966 (तैल रंग) नदी – 1964 प्रतिबिम्ब 1966 बसंत 1966 धूप छांव के बीच, कश्मीरी सैरा इत्यादि है।

रामकुमार के प्रारम्भिक कार्य में मानवाकृतियां नजर आती है लेकिन 60 व 70 के दशक में ये आकृतियां गायब हो जाती है। वाराणसी में देखे गये दृश्य, भवन, विरिडियन, मन्दिर घनवादी शैली में एक नये रूप में प्रकट होते है। ज्यामितीय रूपाकारों से बने भू दृश्य जैसे लगते है। कहीं–कहीं ये जयामितीय आकार रंगों द्वारा तुलिकाघातों से बनाये गए है। कहीं–कहीं रेखाओं द्वारा भी रेखांकन किया गया है।

'कश्मीर' ऑईल माध्यम में बनाया गया चित्र है। 1962 में तैयार किया गया यह चित्र कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य को ज्यामितीय रूपाकारों द्वारा प्रस्तुत करता है। नीले रंग की पृष्ठभूमि में ऊपर धूमिल सफेद रंग लिए सूर्य चित्रित है तथा नीचे ज्यामितीय रूपाकारों में गुत्थे हुए भवनाकार है। धूमिल रंग योजना काम में ली गयी है।

'नगरीय दृश्य' 1965 ई. में तैल माध्यम में बनाया चित्र है। जिसमें तुलिकाघातों से पैच द्वारा नगर का दृश्य दिखाया गया हैं कभी हल्के तो कभी गहरे रंग कभी मोटे तो कभी पतले रंगों के उचित सामंजसय से अमूर्त रूप में घनाकार भवन निर्मित किये गए है। वाराणसी भ्रमण के दौरान देखे गए दृश्यों में से एक है।

'वाराणसी' भी 1966 ई. में तैल माध्यम में बनाया गया चित्र है जो वाराणसी भ्रमण के दौरान वाराणसी घाट पर देखे गए मन्दिरों, भवनों से अभिप्रेरित है। जिसमें स्पष्ट रूप से ज्यामितीय रूपाकारों का प्रयोग देखने को मिलता है।

खंडर अमूर्त ज्यामितीय रूपाकारों द्वारा निर्मित तेल माध्यम में बना चित्र है। भ्रमण के दौरान देखे गए भवनों के खंडर को इस चित्र में दिखाया है। रंगों, तुलिका द्वारा छोटे बड़े घन, आयत त्रिकोण को मिलाकर यह दृश्य निर्मित किया है।

रामकुमार के 80 व 90 के दशक में बनाए गए चित्रों में अकारों में सरलीकरण नजर आता है। अब दृश्य में आकार बड़े व विशाल रूप में रंगों की तुलिका घातों द्वारा बनने लगे, उनका ज्यामितीकरण कम होने लगा। आगे के दशकों में चित्रों में कहीं –कहीं ही ज्यामितीय रूपाकार नजर आते है। रंगों के स्ट्रोक ही ज्यादा नजर आते है।

के.एस.कुलकर्णी

कृष्ण श्यामराव कुलकर्णी का जन्म 1916 ई. में बेलगांव कर्नाटक में हुआ। ज्यामितीय रूपाकारों के द्वारा कुलकर्णी ने चित्र निर्माण की अपनी निजी शैली या भाषा निर्मित की।

कुलकर्णी की कला में पिकासो के क्यूबिज्म और पारम्परिक भारतीय लोक और आदिवासी कला समिश्रण देखने को मिलता है। कुलकर्णी, अजंता, राजस्थानी कला के अलंकारित्व से काफी प्रभावित थे।

कुलकर्णी चित्रों में बोल्ड रूपाकारों, रेखाओं का प्रयोग करते है। त्रिभुज, आयत वर्गो के ब्लॉक एक दूसरे से जुडकर सिटी स्केप सी रचना बनाते हे। चित्र संयोजनों का दृश्यात्मक प्रभाव मोजेइक चित्रों की भांति लगता है ऐसा लगता है ज्यामितीय रूपाकारों के ब्लॉक को रंगों द्वारा भर दिया गया है। कभी–कभी ये रूपाकार सरल तो कभी जटिल रूपाकार संरचनाएं बनाते है।

कुलकर्णी ने संयोजन 1957 में आधुनिक अराजकतापूर्ण परिस्थितियों को उजागर करते हुए विस्त्र के विनाश को प्रतिध्वनित किया है।

कुलकर्णी के ज्यामितीय रूपाकारों में बनाए गए प्रमुख चित्रों में थ्री सिस्टर्स एक्रेलिक माध्यम में पेपर पर बनाया गया संयोजन है। चित्र में मानवाकृति के बजाय ज्यामितीय रूपों से निर्मित अमूर्त आकार नजर आते हैं। आकारों पर काले रंग से बाह्य रेखांकन किया है। लाल, हरे जैसे विरोधी रंगों का पीले, नारंगी रंग द्वारा संतुलित किया गया है। काले रंग की उपस्थिति चित्र में निराशा रहस्यता को उजागर करता है।

इसी प्रकार लास्ट सपर में वृत, चतुष्कोणों, आयतों से निर्मित मानवाकृतियां नजर आती हैं। गुलाबी, भरे, काले रंग के साथ हरे रंग की छटा अद्भुत है। एक्रेलिक माध्यम में 1987 ई. में बनाया गया यह चित्र हिंसा, गरीबी भ्रामकता को प्रकट करता है।

संदर्भ

1. भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 पृ.84.
2. Siddqui, Rashda, in construction with Hussain Painting, Bookds Today on Imprint of the India Today, Group, New Delhi, P.65.
3. Hussain, M.F., Beyond The Canvas And Unfinshed Protrait of Indus Daryaganj, New Delhi 1994.
4. Bhaggeria, Purushottam, Elite Collections of Modern & Contemporary Indian Art.
5. Nand Karni, Dynaneshwar, Hussian riding the Lightning. Ramdas Bhatkal for popular Prakashan Pvt. Ltd., 1996
6. Sen, Geeti, Bindu, Space and time in Raza's Vision media Transesia India Limited, new Delhi, P.86
7. समकालीन कला, नवम्बर 1984, ललित कला अकादमी, रविनद्र भवन, नई दिल्ली 11001 पृ.27.
8. hhtp://www.stateofkerala.in/kerala_celebrities/k_c_s_paniker.php

9. Jahan, Badar, Abstraction in Indian Paintin, Post Independence Era, kaveri Books, Pub, 2008, New Delhi, p.100.
10. मागो, प्राण्नाथ, मोहन, सौमित्र (हि. अनुवाद) भारत की समकाली कला एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, प्र.सं., 2011, पृ.78.
11. https://www.tribuneindia.com/neews/archive/features/value-of-art-390387
12. James Josef Chalmandal, Art Artist's village]Oxford university Press, New Delhi,
13. जोशी, ज्योतिश, भारतीय कला के हस्ताक्षर।
14. वर्मा, अविनाश, भारतीय चित्रकला इतिहास, रामकुमार, बरेली, 1992, पृ.309–310
15. मोनोग्राफ, रामकुमार ललित कला अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली, पृष्ठहीन
16. रामकुमार, हिन्दी संस्करण, 1968 ललित कला अकादमी, रविन्द्र भवन द्वारा प्रकाशित नई दिल्ली, पृ.39.
17. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (14–20 दिसम्बर, 2010)
18. Kumar Ram, A Retrospective, national Gallery of Modern Art, Jaipur House, New Delhi.
19. Manifestation, 20th Century Indian Art DAG, Delhi Art Gallery.
20. Jain, Virendra kumar, K.S. Kulkarni, A separate rality.
21. Indian abstracts an absence of from DAG Delhi art gallery.